विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

अगस्त 2023 श्रावण-भाद्रपद । विक्रमी सं. 2080

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के तीन वर्ष एवं विद्या भारती

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की दृष्टि में भारतीय शिक्षा

बिहार-झारखंड के पूर्व छात्रों का सम्मलेन, दिल्ली

भारत के 77वें स्वतंत्रता दिवस पर विद्या भारती के विद्यालयों में फहराया गया तिरंगा

सीमा पर तैनात सैनिकों की कलाइयों पर सजीं इको फ्रेंडली राखियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के तीन वर्ष एवं विद्या भारती

पृष्ठभूमि

अपने छह वर्ष के सतत परिश्रम से विद्या भारती ने पचास हजार से अधिक गाँवों तथा एक हजार से अधिक सेमिनारों और संवाद सत्रों, जोकि प्राय: देश के सभी जिलों में आयोजित हुए. के माध्यम से संकलित सामग्री के आधार पर 4000 पृष्ठ से अधिक की सामग्री दृष्टिपत्र तथा सुझावों के रूप में प्रस्तुत किए जिनमें मुख्यतः विद्यालय संकुल, विशेष शिक्षा क्षेत्र, समाज और विद्यालय का सम्बन्ध विद्यालय का सामाजिक सरोकार समाज सेवा के कार्य, मनुष्य निर्माण तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा का स्वरूप आदि विषय थे। प्रसन्नता का विषय है कि 29 जुलाई, 2020 को घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इनमें से अनेक सुझावों को स्थान प्राप्त हुआ। प्रचलित शिक्षण व्यवस्था से डट कर और विशेष रूप से भारत केन्द्रित शिक्षा के सम्बन्ध में की गई अनुशंसाओं का विद्या भारती ने स्वागत किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का प्रथम वर्ष

विद्या भारती ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही तय किया कि नीति के प्रावधानों को सामान्य समाज, शिक्षा जगत, बुद्धिजीवी वर्ग, शैक्षिक प्रबन्धकों तथा अन्य हितग्राहियों के ध्यान में लाना आवश्यक है क्योंकि उनके सहयोग के बिना नीति का क्रियान्वयन संभव नहीं होगा। कोरोना महामारी का प्रकोप होने पर भी हम आभासी बैठकों के माध्यम से अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंचे। कुछ विशेष कार्यों का वर्णन निम्नानुसार है

(क) भारतीय शिक्षा दर्शन एवं मनोविज्ञान:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लेख होने पर भी भारत केन्द्रित शिक्षा का विचार शिक्षा जगत को अथवा अधिकारियों को स्पष्ट नहीं था। अतः विद्या भारती ने भारतीय शिक्षा दर्शन तथा भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान विषय पर आठ विस्तृत आलेख तैयार कर शिक्षा मंत्रालय. एन.सी.ई.आर.टी. तथा एस. सी.ई.आर.टी. को सौंपे।

(ख) प्रशिक्षण प्रणाली का पुनर्गठन

विद्या भारती का लक्ष्य नीति के क्रियान्वयन पर था। अतः विद्या भारती संगठन में सभी हितग्राहियों को नीति के विवरणों से सुसज्ज करने के लिए अपने प्रशिक्षण की व्यवस्था का नये ढंग से उन्मुखीकरण किया गया। देश भर में आचार्यों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करने के लिए लगभग 1500 मास्टर ट्रेनर्स का विशेष प्रशिक्षण किया गया।

(ग) फोकस एरिया समूह

एन.सी.ई.आर.टी. के निर्देशों के अनुसार विद्या भारती के प्रतिनिधि कार्यकर्ता सभी 25 फोकस समूहों में सम्मिलित हुए तथा राष्ट्रीय स्तर की एवं प्रान्तों की पाठ्यचर्या के निर्माण में सक्रिय भूमिका का निर्वाह और सन्दर्भ सामग्री उपलब्ध कराई।

(घ) विद्या प्रवेश:

बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) पर सुविधारित विवरण के साथ प्रमुख आधार बिन्दु शिक्षा मंत्रालय को उपलब्ध कराये गए। विद्या प्रवेश, अर्थात ग्रेड-1 में प्रवेश लेने वाले शिशुओं की तैयारी के लिए तीन माह की अवधि का खेल आधारित अभ्यास क्रम, विद्या भारती के कार्यकर्ताओं ने प्रयासपूर्वक तैयार किया, जो निपुण भारत मिशन का एक प्रमुख भाग है।

(च) सरकार तथा अन्य संस्थाओं के साथ सम्पर्क |

सरकार के शिक्षा तंत्र तथा अन्य संस्थाओं के साथ केन्द्र एवं राज्यों के स्तर पर प्रत्येक माह मिलकर उन्हें आवश्यक सन्दर्भ सामग्री उपलध कराने का कार्य निरन्तर चला। हमें Confederation of Indian Industries (CII), National Academy of Audit & Accounts (NIAA) तथा अन्य संगठनों के पैनल में भेज कर NEP-2020 के विषय में प्रस्तुति देने तथा सुझावों पर चर्चा करने कार्य सौपा गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के द्वितीय वर्ष में उपलब्धियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में कोरोना पश्चात के समय में गति बढ़ी। कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार रहीं-

(क) पाठ्यचर्या के लिए संदर्भ सामग्री:

विद्या भारती ने विषय को मूल तक ले जाते हुए अनेक श्रेणियों के हितधारकों से आभासी तथा प्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा जानकारियाँ एकत्र कर उपलब्ध कराई, जिनमें शिक्षक अभिभावक, विद्यार्थी, नवसाक्षर एवं निरक्षर, विशेषज्ञ विद्वज्जन, गैर-सरकारी संस्थाएं आदि सम्मिलित थे। संकलित कुल लगभग 16 लाख सुझावों में से कम से कम 1.5 लाख विद्या भारती के माध्यम से आएं। जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों (DIETS) द्वारा संपादित सर्वेक्षण कार्य में विद्या भारती के आचायों का पर्याप्त सहयोग मिला।

(ख) संचालन समिति(Steering Committee) के समक्ष विता भारती की प्रस्तुतिः

विद्या भारती के 8 शिक्षाविदों ने 21 फरवरी, 2022 को संचालन समिति के सम्मुख विविध स्तरों की तथा एक सामान्य इस प्रकार 5 पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुति दी, जिसमें शिक्षा क्षेत्र की सर्वोत्तम विधियों का प्रदर्शन किया गया। इसका अच्छा प्रतिसाद मिला। इस प्रस्तुति में समिति के अध्यक्ष पद्मविभूषण डॉ. के. कस्तूरीरंगन की टिप्पणी थी कि संचालन समिति के पास विचार तो हैं किन्तु विद्या भारती ने अपने विद्यालयों में उनका प्रत्यक्ष क्रियान्वयन करके देखा है। इसके बाद से उनके व्यवहार में विद्या भारती के प्रति भावनात्मक लगाव विकसित हुआ तथा तब से उन्होंने सतत संपर्क बना कर रखा है।

(ग) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की तकनीकी टीम का विद्या भारती विद्यालयों में प्रवास श्री जितेन्द्र शर्मा, श्री शोभन नेगी, श्री राकेश तिवारी एवं श्री गजानन लोढे की चार सदस्यीय टीम ने गुजरात, उत्तर प्रदेश एवं पंजाब स्थित विद्या भारती विद्यालयों का भ्रमण 7 से 14 अप्रैल, 2022 के मध्य किया। विद्यालयों की श्रेष्ठ पद्धति एवं प्रक्रियाओं का अवलोकन कर इस टीम ने मई माह में स्टीयरिंग कमेटी को एक 20 पृष्ठ की रिपोर्ट सौंपी जिसका शीर्षक था- "Inputs from Vidya Bharati schools for National Curriculum Framework" इस रिपोर्ट के लगभग सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं का समावेश राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (NCF) में हुआ है।

(घ) बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (NCFECCE) – Foundation Stage में विद्या भारती का सहयोग फाउण्डेशन स्तर की पाठ्यचर्या की घोषणा 20 अक्टूबर 2022 को हुई, जिसमें विद्या भारती के सिद्धान्तों तथा पद्धतियों का समावेश हुआ है। सर्वांगीण विकास समग्र विकास तथा पंचकोशात्मक विकास की हमारी अवधारणाओं को इस फ्रेमवर्क में महत्वपूर्ण स्थान मिला है। **जारी ...**

(च) पाठ्यपुस्तक लेखकों की आभासीय बैठक:
पाठ्यपुस्तक निर्माण की पूर्व तैयारी के उद्देश्य से संभावित पुस्तक लेखकों तथा विषयवस्तु तैयार करने वाले चयनित कार्यकताओं की ऑनलाईन कार्यशालाएँ माह जनवरी तथा फरवरी, 2022 में आयोजित की गई जिनमें 9 विषयों के 950 से अधिक लेखकों ने प्रतिभाग कर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

(छ) आचार्यों के लिए 14 प्रत्यक्ष कार्यशालाएं माह अप्रैल से जुलाई 2022 के मध्य हमने 14 विषयों पर 14 कार्यशालाओं का आयोजन किया, जिनमें 1200 विषय विशेषज्ञ, सम्पादक, विषयवस्तु रचनाकारों तथा विषय शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। इन कार्यशालाओं की विशेषता यह थी कि देश के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा संस्थानों ने इन कार्यशालाओं का आतिथ्य किया तथा श्रेष्ठ प्रशिक्षकों / स्रोत व्यक्तियों की सेवाएं उपलब्ध कराई।

(ज) जादुई पिटारा
'जादुई पिटारा नामक फाउण्डेशन स्तर के लिए अधिगम-शिक्षण सामग्री का लोकार्पण शिक्षा मंत्रालय द्वारा 20 फरवरी, 2023 को किया गया। इसके पीछे की प्रेरणा विद्या भारती की शिशु वाटिका है, जो कि बस्ता-विहीन गतिविधि आधारित आध्यात्मिकता-जडित, खेल खिलौनों के माध्यम से सिखाने की पद्धति है।

तृतीय वर्ष का प्रगति प्रतिवेदन:
इस वर्ष में हमें अपने कार्य की गति बढानी आवश्यक थी। क्योंकि समय कम था, सम्पूर्ण प्रक्रिया को मार्च 2024 तक पूर्ण करने का लक्ष्य था और अनेक नवाचारों का समावेश किया जाना था। इस वर्ष की प्रगति इस प्रकार रही-

(क) कक्षा 1 व 2 के लिए पाठ्यपुस्तकें :
विद्या भारती द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम के आधार पर तथा NCERT एवं तकनीकी समूह के सहयोग से हमारी से टीम ने कक्षा 1 एवं 2 के लिए पाठ्यपुस्तकों की रचना की जिन्हें 4 जुलाई. 2023 को जारी किया गया।

(ख) आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण
विद्या भारती को कुछ राज्यों में बालवाटिका कक्षा 1-2 के लिए शिशु वाटिका पद्धति पर आधारित आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी सौंपी गई, जिनके लिए अपने द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित स्वतंत्र पुस्तकें सम्बन्धित राज्य सरकारों द्वारा प्रकाशित की गई।

(ग) NCF समिति के समक्ष विषयशः दृष्टिकोण:
सेकण्डरी कक्षाओं के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का प्रारूप विशेषकर इतिहास विषय के लिए विद्या भारती के छह कार्यकर्ताओं की टीम प्रारूप समिति के आग्रह पर प्रस्तुति देने के लिए गई।

(घ) अध्यायशः सुझाव एवं संशोधन:
मई-2023 में बेंगलूरु में संपन्न उसी बैठक में हमने विद्यालयशिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (NCFSE) 2023 के प्रारूप का अध्ययन कर प्रत्येक अध्याय में संशोधन के सुझाव दिए थे जिनमें अवलोकन शिक्षण पद्धतियों की न्यूनताओं तथा इस सामग्री को और अधिक भारत-केन्द्रित कैसे बनाया जा सकता है आदि पर आधारित 6 आलेख सौंपे गए इसके प्रभाव से विद्या भारती द्वारा किए गए योगदान की प्रशंसा हुई तथा उन्होंने हमारी अनुशंसाओं को तर्कसंगत उद्देश्यपूर्ण परिणामकारी तथा उपयोगी बताया और हमारे साथ संपर्क में रहे।

(च) विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (NCFSE) - 2023 जारी होने की तैयारी:
NCFECCE की विशेषताओं के अनुक्रम में NCFSE में भी हमारी अनेक श्रेष्ठ पद्धतियों का सुझाव दिया गया है। पंचकोशात्मक विकास की विस्तृत चर्चा के साथ-साथ मूल्य शिक्षा, भारत केन्द्रित विद्यालय संस्कृति, विद्यालय प्रक्रिया तथा विविध परम्परागत प्रमाणो (प्रत्यक्ष अनुमान उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, शब्द) को ज्ञान के स्रोत के रूप में वर्णित किया गया है। विद्यालय सामाजिक परिवर्तन का केन्द्र कैसे बनें तथा विद्यालय की वंदना सभा का वर्णन हमारे विचार-व्यवहार के आधार पर किया गया है।

भविष्य का मार्ग:
(क) अनेक संघर्षों के बाद तथा सतत सम्पर्क बनाए रख कर हम यहाँ तक सफल हो सके हैं कि NEP- 2020 तथा NCF-2023 में हम अपने अनेक सुझाव तथा अनुशंसाओं का समावेश करा सके। अब हमारा काम अगले सोपान पर पहुँच कर पाठ्यक्रम निर्माण तथा पाठ्यपुस्तकों की रचना में सहभाग करने का है जिसमें अत्यन्त सूक्ष्मता से ध्यान रखने की आवश्यकता होगी क्योंकि पाठ्यपुस्तकें शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका और विद्यार्थियों के लिए अधिगम सामग्री के रूप में काम करती है। अत: हमारी अपेक्षा है कि राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं अधिगम शिक्षण साम्रगी (National Syllabus & Learning Teaching Material Committee NSTC) तथा National Curriculum Framework Oversight Committee- NOC उच्चाधिकार प्राप्त समितियों का गठन यथाशीघ्र किया जाए जो कि अब तक सम्पन्न कार्य को आगे गति देने के लिए नितान्त आवश्यक है।
(ख) पाठ्यपुस्तक निर्माण के लिए पाठ्यक्रम के उपसमूहों (Curricular Area Sub- groups) के NCERT द्वारा गठन किए जाने की त्वरित आवश्यकता है, जिसके लिए हमारी भूमिका को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक है, ताकि उसी प्रकार हम अपने आगे बढ़ने की दिशा तय करें।
(ग) पाठ्यपुस्तक लेखन के लिए विषय विशेषज्ञों विषयवस्तु रचनाकारों तथा संपादकों की सूची हमारे पास तैयार हैं। 30 सितम्बर, 2023 तक पाठ्यक्रम रचना कार्य पूर्ण होकर अक्टूबर से पाठ्यपुस्तक लेखन का कार्य प्रारम्भ होगा, ऐसा अनुमान है। हम इसके लिए तैयार है।

डी. रामकृष्ण राव
(अखिल भारतीय अध्यक्ष, विद्या भारती)

बिहार-झारखंड के पूर्व छात्रों का सम्मलेन, दिल्ली

दिल्ली | 19 अगस्त । विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद, उत्तर पूर्व क्षेत्र द्वारा दिल्ली एनसीआर में रहने वाले बिहार झारखंड के पूर्व छात्रों का सम्मलेन दिल्ली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डॉ कृष्ण गोपाल सह सरकार्यवाह, अखिल भारतीय स्वयंसेवक संघ का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में 200 से अधिक पूर्व छात्रों ने भाग लिया।

वैचारिक लेख

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की दृष्टि में भारतीय शिक्षा

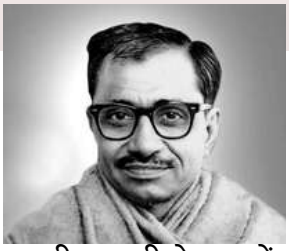

दीनदयाल जी की दृष्टि में भारतीय शिक्षा विषय पर विचार करते हुए कुछ प्रश्न स्वभावत: मन में उठते हैं जैसे किसी भी समाज की शिक्षा व्यवस्था अच्छी है या बुरी। इसकी कसौटी क्या है? शिक्षा को अच्छी या बुरी के रूप में जानने का प्रयत्न भी उचित है क्या? शिक्षा का लक्ष्य क्या होना चाहिए? क्या स्वतन्त्र भारत की शिक्षा व्यवस्था अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रही है? शिक्षा कितनी वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए? शिक्षा में विषयानुराग कितना उचित या अनुचित है? ये अनेक प्रश्न हैं जिसका उत्तर हमारे शिक्षा निर्धारकों को खोजना है। भारत की स्वतंत्रता एक ऐसी सीमा रेखा है जो हमें आत्मालोचन के लिए ज्यादा प्रेरित करती है।

भारतीय शिक्षा के सम्बन्ध में पं. दीनदयाल जी के विचार उनकी पुस्तक 'राष्ट्रचितन' एवं पांचजन्य में उनके कुछ लेखों एवं आर्गेनाइजर में प्रकाशित उनके लेखों के अध्ययन से यह परिलक्षित होता है कि दीनदयाल जी एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था के समर्थक थे जो समयानुकूल होने के साथ देशानुकूल भी हो। उनके अनुसार व्यष्टि और समष्टि को जोड़ने वाला प्रथम सूत्र है- 'शिक्षा'। वे शिक्षा को समाज की जननी मानते हैं। उनके अनुसार नए घटकों को पुराने घटकों से अपने सम्बन्ध भान रहे तथा वे अपने पुराने घटकों की जीवन की अनुभूति को मानकर और समझकर आगे चले तो उस समूह को समाज नाम प्राप्त होता है। अर्थात एक के बाद एक मानव जब दूसरों को, जो प्राय: उसके बाद जन्मे हो, विभिन्न क्षेत्रों के अपने सम्पूर्ण अनुभव को अथवा उसके सारभूत अंश को विभिन्न उपायों द्वारा प्रदान या संसर्गित करता है तो इस प्रक्रिया में एक निरंतर गतिमान मानव समूह की सृष्टि होती है जिसे समाज कहते हैं। यदि शिक्षा न हो तो मानव समाज का जन्म ही न हो।

समाज में शिक्षा के स्थान की प्राथमिकता एवं गरिमा का बोध कराते हुए दीनदयाल जी कहते हैं–हमारे शास्त्रकारों के अनुसार यह ऋषि ऋण है जिसे चुकाना प्रत्येक का कर्तव्य है। जब हम भावी सन्तति की शिक्षा की व्यवस्था करते हैं तो हमारी उनके प्रति उपकार भावना नहीं रहती अपितु हमें जो कुछ धरोहर अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई है उसे आगे की पीढ़ी को सौंपकर उनके ऋण से उऋण होने की मनीषा रहती है।

दीनदयाल जी मानते हैं कि शिक्षा हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है समाज द्वारा इसकी व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षा का विक्रय समाज के लिए घातक होगा। अत: शिक्षा सुनिश्चित और नि: शुल्क होनी चाहिए। इस सन्दर्भ में वह लिखते हैं कि बच्चे को शिक्षा देना समाज के अपने हित में है। जन्म से मानव पशुवत पैदा होता है। शिक्षा व संस्कार से वह समाज का अभिन्न घटक बनता है। जो काम समाज के अपने हित में हो उसके लिए शुल्क लिया जाए यह तो उल्टी बात है।

वर्तमान की बदली हुई परिस्थिति में जब हमनें लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की है, इस सामाजिक दायित्व को वहन करने का दायित्व 'राज्य' का है। अपनी पुस्तक 'सिद्धांत और नीति' में दीनदयाल जी लिखते हैं कि "प्रजा को शिक्षा की उपेक्षा न करने देना, शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में उसकी सहायता करना, प्रत्येक स्थान पर विद्वान गुरुओं का प्राचुर्य रखना, देश-काल निमित्तों को शिक्षा के अनुकूल रखना, स्थान-स्थान पर शिक्षाश्रमों की व्यवस्था करना, सर्वत: उनके उत्साह को बढाए रखना राज्य के परम्परागत कर्तव्य हैं।" राज्य को शिक्षा के प्रति उत्तरदायी मानते हुए भी उपाध्याय जी शिक्षा के सरकारीकरण के विरुद्ध हैं। वे कहते हैं-बेशक एक कल्याणकारी राज्य में बच्चों की शिक्षा की मूल जिम्मेदारी सरकार की ही होती है, लेकिन हमें शिक्षा के सरकारीकरण से बचना चाहिए। वे शैक्षिक स्वायत्तता का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार–"शिक्षा का समय राज्य द्वारा होने के उपरांत भी सरकारीकरण नहीं होना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा संस्थाओं का प्रबंध करने के लिए शिक्षकों तथा शिक्षाविदों के स्वायत्त निकाय होने चाहिए। सरकार के विभाग के रूप में उनका चलना ठीक नहीं। सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षा संस्थाओं का भेद समाप्त कर देना चाहिए। सभी क्षेत्रों के शिक्षकों के वेतन क्रम व अन्य सुविधाएं ऐसी हो जिससे योग्य व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में आने में संकोच न करें। शिक्षा संस्थाओं को मैनेजरों अथवा प्रबन्ध समिति की निजी सम्पत्ति बनने देना उचित नहीं।"

"स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर निजी सम्पत्ति बनाने की प्रवृत्ति की ओर से भी सावधान रहना आवश्यक है। अतःस्वायत्तता का अर्थ शिक्षा की दुकानदारी न होकर संविधानत: सुपरिभाषित स्वायत्त अखिल भारतीय निकाय के अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था का होना है।"

यहीं वस्तुत: दीनदयाल जी का अभिप्रेत था। इसी प्रकार वे शिक्षा के दोहरे ढाँचे, जिसमें 'पब्लिक विद्यालय' व सरकारी अथवा निजी विद्यालय की व्यवस्था होती है, के भी विरुद्ध हैं। वे पब्लिक विद्यालयों को 'अखिल भारतीय तानाशक' प्रभाव छोड़ने वाले विद्यालय के रूप में वर्णित करते हुए कहते हैं- "शिक्षा समाज में भेद निर्माण करने वाली न होकर एकात्मभाव निर्माण करने वाली हो, भारत के 'पब्लिक विद्यालय' इस उद्देश्य के प्रतिकूल हैं। आवश्यकता है, सभी शिक्षण संस्थाओं का स्तर ऊंचा उठाया जाए।"

उनके विचार में समाज व राज्य संस्था के द्वारा जहाँ शिक्षा का योग्य नियमन होना चाहिए, वहीं शिक्षातत्व पर बाहरी साम्राज्यवादी ताकतें हमारे समाज को अस्वस्थ न करें, इसका ध्यान रखना भी जरूरी है। इस दृष्टि से वे भारत में ऐसी संस्थाओं को खतरनाक मानते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में विदेशियों को अधिकार देना कहाँ तक उचित है? अपरिपक्व मस्तिष्क पर विदेशी शक्तियों को प्रभाव डालने की अनुमति देना जैसे जड़ को काटने की स्वतन्त्रता देना ही है।

दीनदयाल जी मानते हैं कि शिक्षा केवल शालेय उपक्रम मात्र नहीं है वरन एक सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है। शालेय शिक्षा उसका महत्वपूर्ण भाग होते हुए भी केवल शालेय शिक्षा से समाज सर्वांग रूप से सुरक्षित नहीं हो सकता। अतः वे एक शिक्षकत्रयी का वर्णन करते है। उनकी मान्यता है कि शिक्षा के व्यापक अर्थों में समाज का प्रत्येक घटक ही शिक्षक है। अतः प्रथम शिक्षक है- समाज, द्वितीय शालेय अध्यापक एवं तृतीय है- व्यक्ति स्वयं।

जारी ...

इस शिक्षकत्रयी को भारतीय शास्त्रकारों नें निम्न वाक्यों में प्रतिबिंबित किया है –
1. माता प्रथमा गुरु:
2 आचार्य देवो भव:
3 आत्मदीपो भव:
उन तीनों शिक्षकों के शिक्षा देने के अलग अलग माध्यम है, प्रथम-संस्कार, द्वितीय-अध्यापन व तृतीय-स्वाध्याय।

माता प्रथमा गुरू (संस्कार)

संस्कार ही शिक्षा का प्रथम माध्यम है जो व्यक्ति समाज द्वारा ग्रहण करता है। संस्कार की दृष्टि से समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षक है। व्यक्ति सबसे पहले जिस सामाजिक घटक के सम्पर्क में आता है वह माता है। अत: कहा गया कि माता प्रथमा गुरुः। फिर व्यक्ति समाज के अन्य घटकों के सम्पर्क में आता है। एक सामाजिक परिवेश रहता है जिसका नवजात एवं विकसित हो रहे बालक पर अनजाने में ही प्रभाव होता रहता है इसी प्रभाव को उपाध्याय जी संस्कार कहते हैं। माता-पिता, परिजन = पुरजन-गुरुजन, अग्रपाठी, सहपाठी, समाज के नेता और अधिष्ठाता। ये सभी विभिन्न प्रकार के संस्कार निरन्तर डालते रहते हैं। अत: समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षक है। उसका यह सामाजिक दायित्व है कि वह अपने व्यवहार से सत्संस्कारी परिवेश का समाज निर्माण करे। इस दायित्व बोध से शून्य होकर समाज यदि केवल शालेय शिक्षा व शिक्षक पर ही आश्रित होगा तो उसकी प्रगति नितान्त संदिग्ध मानी जायेगी। शिक्षा में सर्वजन सहभागिता आवश्यक है। यह केवल कुछ विशेषज्ञों मात्र का विषय नहीं है। उसे शैक्षिक लोकतंत्र की भी संज्ञा दी जा सकती है।

आचार्य देवो भव (अध्यापन)

शिक्षालयों की व्यवस्था कर औपचारिक अध्यापन के माध्यम से शिक्षा देना एक सर्वमान्य शैक्षिक तरीका है। अक्षर ज्ञान व कुछ पाठ्यक्रम के माध्यम से हम व्यक्ति को शिक्षित करते हैं। यह औपचारिक शिक्षा निर्जीव कर्मकाण्ड न बन जाय, अत: आवश्यक है कि शिक्षा के व्यापक अर्थों को समझने वाले व्यक्ति अध्यापक बनें तथा समाज शिक्षक को सर्वाधिक सम्मानित पद के रूप में स्वीकार करे। अपने शुभेच्छु पूर्वाध्यापक की बात न मानते हुए उपाध्याय ने टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में प्रवेश लिया तथा वहाँ के अनुभव को अपने लेख में इस प्रकार वर्णित करते हैं – "यथासमय मैंने प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रवेश लिया। मैने वहाँ देखा कि शिक्षक का यह उदात्त कार्य आज आदर्शवादी व सेवाभावी लोगों को आकर्षित नहीं कर पा रहा है। केवल वह लोग जो अन्यत्र स्थान पाने में असमर्थ रह जाते हैं अध्यापक बन जाते हैं। आई.सी.एस. से लेकर नायब तहसीलदार तक की विभिन्न परीक्षाओं में ये प्रशिक्षणार्थी बैठते थे, लेकिन इनमें जो अनुत्तीर्ण हो जाते, वे ही अध्यापक बनने की सोचते थे। जिस शिक्षक के हमारी प्राचीन समाज व्यवस्था ने 'आचार्य देवो भव' कहा, उसके आभामण्डल का यह अपखण्डन बहुत ही चिन्ताजनक है। यदि हमें अपने समाज को सही अर्थों में सुशिक्षित करना है तो अध्यापक की गरिमा को पुनः स्थापित करना होगा।

आत्मदीपो भव (स्वाध्याय)

समाज की शिक्षक अवस्था तथा औपचारिक अध्यापन व्यवस्था के बाद व्यक्ति स्वयं ही अपना शिक्षक होता है। स्वाध्याय मनुष्य का स्वयं अध्यापन है। पठन, मनन और चिन्तन के सहारे मनुष्य ज्ञान को आत्मसात करता है। बिना स्वाध्याय के न तो प्राप्त ज्ञान टिकता है न ही बढ़ता है। स्वाध्याय के बिना ज्ञान को जीवन का अंग बनाकर तेजस्वी बनाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। अत: 'स्वाध्यायन्मा प्रमद:' (स्वाध्याय में आलस्य मत करो), यह कुलपति का स्नातक को दीक्षान्त के अवसर पर आदेश रहता है। पुस्तकालय आदि की व्यवस्था स्वाध्याय के लिए आवश्यक है। उपाध्याय जी समाज में शिक्षामय वातावरण के लिए घर व नगर में पुस्तकालयों की स्थापना तथा पठन-पाठन का वातावरण बनाने पर विशेष बल देते हैं। इसके बिना शालेय शिक्षा का भी वांछित टिकाव एवं विकास संभव नहीं है। शालेय शिक्षा अकेली ही मनुष्य का निर्माण नहीं करती। संस्कार और अध्यापन का बहुत सा ऐसा क्षेत्र है जो शालेय क्षेत्र के बाहर है। यदि इन दोनो क्षेत्रों में विरोध रहा तो विद्यार्थी के जीवन में एक अंतर्द्वन्द्व उपस्थित हो जाता है। एक समन्वित, एकीकृत, सर्वांगपूर्ण अखण्ड व्यक्तित्व का विकास होने के स्थान पर उसकी प्रकृति में विभक्त निष्ठाओं का समावेश हो जाता है। समाज और उसके बीच एक खाई पड़ जाती है। आज केवल औपचारिक शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है, तथा वांछित परिणामों को न प्राप्त कर सकने की कुंठा के कारण शिक्षा पद्धति की निन्दा तथा परस्पर आरोप-प्रत्यारोप का वातावरण बन रहा है। उपाध्याय जी इसे समाज की अस्वस्थ अवस्था का परिचायक मानते हैं। औपचारिक शिक्षा तो संस्कार एवं स्वाध्याय के बीच की कड़ी है। शिक्षा की सर्वांगपूर्णता की प्रथम शर्त है- 'संस्कारक्षम समाज' अर्थात प्रत्येक व्यक्ति में शिक्षा के प्रति उत्तरदायित्व की भावना आवश्यक है। परिवार, हाट-बाजार, खेत-खलिहान ये सब शिक्षालय के ही रूप है। समाज में यह चेतना उत्पन्न करना सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक आन्दोलनों संगठनों व नेताओं का कार्य है। इस कार्य को किए बिना केवल सरकारी माध्यम से शिक्षा की सर्वांगपूर्ण व्यवस्था की कल्पना करना सर्वथा अव्यवहार्य है। समन्वित शिक्षकत्रयी ही समाज में सर्वांगपूर्ण शिक्षा नीति की प्रत्याभूति है। इसी क्रम में उपाध्याय जी शिक्षा के लिए स्वभाषा की अपरिहार्यता को भी आवश्यक बताते हैं।

उपाध्याय जी के सम्पूर्ण वैचारिक प्रतिपादन में शिक्षा व संस्कार व्यवस्था का सर्वाधिक महत्व है। वे समाज के चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति की मूलभूत आधारशिला शिक्षा को ही मानते हैं। उस सन्दर्भ में किसी बाद व व्यवस्था विशेष के आग्रह को उपाध्याय जी असंगत मानते हैं। शिक्षा से प्राप्त सामर्थ्य समाज को सदैव सही रास्ता खोज लेने के लिए सक्षम बनाता है। अत: राजनीतिक व आर्थिक कारणों से योजनाकार जब शिक्षा की अवहेलना करते हैं तब उपाध्याय जी इसे अनुचित करार देते हैं। इस प्रकार उपाध्याय जी अपने देश-काल के अनुरूप भारतीय शिक्षा के वैदिक आदर्श को स्थापित करने के पक्षधर दिखाई देते हैं। सब दिशाओं से मिले शुभ ज्ञान, यह हमारे दर्शन का दिशाबोधक सिद्धान्त है। लेकिन हमें यह भी तय करना होगा कि हमारे देश व समाज के हित में हम क्या ग्रहण करें। यह हमारा अधिकार ही नहीं अपितु वांछनीय भी है।

– डॉ. राकेश दुबे

(लेखक मीरा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, सरदुलेवाला, सर्दुलगढ़, जिला-मानसा पंजाब में प्रधानाचार्य है।)

शैक्षिक प्रयोग

विज्ञान से व्यक्तित्व विकास

नारायणगढ़ | विद्या भारती अपने विद्यालयों में अनेक ऐसी प्रतियोगिताएं एवं गतिविधियां आयोजित करती रहती है, जिससे विद्यार्थियों की रुचि कठिन लगने वाले विषयों जैसे विज्ञान, गणित में अधिक बढ़े। इसलिए ज्ञान विज्ञान मेला, गणित मेला विद्यालय स्तर से अखिल भारतीय स्तर तक आयोजित किए जाते हैं।

विद्यालय में विज्ञान मेले का आयोजन वर्ष 2012-13 से लगातार होता आ रहा है। प्रतिवर्ष विज्ञान मेले से विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अधिक रुचि देखी गई है। रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान व जीव विज्ञान प्रयोगशाला में बच्चों को क्रिया आधारित शिक्षा व विज्ञान के प्रयोग नियमित रूप से कराए जाते हैं। इसका श्रेय हमारे पूर्व संगठन मंत्री रवि कुमार जी को जाता है, जो अपने प्रवास पर आग्रहपूर्वक आचार्यों को इसके लिए प्रोत्साहित करते थे। प्रयोगशाला में प्रयोग के सुखद परिणाम सामने आए हैं। विद्यालय के 3 बच्चों प्राची, अमन एवं हर्ष ने वर्ष 2019 में विज्ञान प्रश्न मंच में अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिभागिता की। राजकीय प्रतियोगिताओं में कई बच्चे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करते रहे हैं। सत्र 2021-22 में वरिष्ठ माध्यमिक कक्षा की 3 बच्चों की टीम राजकीय व्यवस्था द्वारा आयोजित जिला स्तर पर विज्ञान प्रश्न मंच में प्रथम स्थान पर रही। इसमें एक राउंड में 10 प्रश्न प्रयोगशाला के उपकरणों की पहचान पर आधारित थे। इन सभी प्रश्नों के सही उत्तर विद्यालय के छात्रों ने दिए। बच्चों को विज्ञान को आसानी से समझाने के लिए कपूरथला विज्ञान केंद्र में भ्रमण हेतु ले जाया जाता है। 2012-13 से अब तक प्रतिवर्ष विज्ञान मेले में 60 प्रतिशत विद्यार्थी भाग लेते हैं।

विज्ञान प्रयोगशाला स्थापना वर्ष

रसायन विज्ञान :- 2014
भौतिक विज्ञान :- 2014
जीव विज्ञान :- 2018

विज्ञान विषय में उपलब्धियां

• सत्र 2016-17 बाल वर्ग, विज्ञान प्रश्न मंच, क्षेत्रीय स्तर पर तीसरा स्थान।
• सत्र 2017-18 विज्ञान प्रश्न मंच, किशोर वर्ग, अखिल भारतीय स्तर पर चौथा स्थान।
• सत्र 2021-22 जिला स्तरीय विज्ञान प्रश्न मंच प्रतियोगिता में विद्यालय की टीम प्रथम रही।
•सत्र 2022-23 तरुण वर्ग, विज्ञान प्रश्न मंच, क्षेत्रीय स्तर पर चौथा स्थान एवं विज्ञान प्रयोग में प्रांत स्तर पर दूसरा स्थान तथा विज्ञान प्रदर्श में किशोर वर्ग का प्रांत स्तर पर प्रथम स्थान रहा।
• सत्र 2022-23 विज्ञान संकाय की छात्रा वैष्णवी कालड़ा ने सीनियर सेकेंडरी की बोर्ड परीक्षा में जिले में प्रथम स्थान अर्जित किया। रसायन विज्ञान में 99, भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान में 97 अंक प्राप्त किए। वैष्णवी को 15 अगस्त को मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया।

अन्य उपलब्धियां

• सत्र 2017-18 रिया धीमान प्रांत स्तर पर कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा में तीसरे स्थान पर रही।
•सत्र 2018-19 जिला स्तर पर 10वीं बोर्ड परीक्षा में पांचवां एवं छठा स्थान विद्यालय की छात्राओं ने अर्जित किया।
• सत्र 2022-23 में कक्षा बारहवीं की छात्रा वैष्णवी कालड़ा ने 486 अंक प्राप्त करते हुए जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रयोगशाला के अलावा विज्ञान विषय पर हुए प्रयोग

• दक्षता वर्ग में विज्ञान विषय के आचार्यों ने अन्य आचार्यों को विज्ञान विषय की आधारभूत अवधारणाएं प्रयोग विधि से बताईं।
•सत्र 2022-23 में रोबोटिक लैब के सेमिनार को ऑर्गेनाइज किया गया, जिसमें बच्चों ने स्वयं रोबोटिक कार बनाकर देखी।
• विज्ञान प्रयोगशाला के बरामदे में विज्ञान थीम पर आधारित wall painting की गई है। जिसे वहाँ आने -जाने वाले विद्यार्थी रुचि लेकर देखते और समझते हैं।

इन प्रयोगशालाओं में नियमित रूप से कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थी जाते हैं। विद्यालय प्रधानाचार्य इस कार्य में विशेष रुचि लेते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नारायणगढ़ (अंबाला) हरियाणा

गरीब छात्रों के लिए शुरू हुआ "विद्या दान महाअभियान"

जालंधर, पंजाब। विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिंद चंद्र महंत ने विद्यादान महाअभियान की शुरुआत की जिसके तहत पंजाब के गरीब छात्रों को मुफ्त शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा व्यवस्था समाज आधारित रही है। शिक्षा का संपूर्ण कार्य सरकार द्वारा संभव नहीं है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में हम सभी को सरकार के साथ सहयोग करना चाहिए। विद्यादान महाअभियान का कार्यालयीन काम देखने के लिए होशियारपुर के शिवम गुप्ता को नियुक्त किया गया है। अखिल भारतीय संगठन मंत्री गोबिंद महंत जी ने 'शिक्षा दान डेस्क' का उद्घाटन भी किया। इस अवसर पर पंजाब के सभी जिला केंद्रों के विद्या मंदिरों के प्रधानाचार्य, प्रबंधक और अध्यक्ष उपस्थित रहे। जालंधर से श्री विजय नड्डा, श्री राजेंद्र कुमार, कुरुक्षेत्र से श्री देशराज शर्मा, मुख्य रूप से उपस्थित मौजूद रहे।

रक्षाबंधन के अवसर पर विद्या भारती की बालिकाओं ने बाँधें रक्षासूत्र

सशिमं की छात्राओं ने बनाई इको फ्रेंडली राखियाँ | सीमा पर तैनात सैनिकों की कलाइयों पर सजीं ये राखियाँ

बागबाहरा। स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर. उ. मा. विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण के महत्व को ध्यान में रखते हुए इको फ्रेंडली राखियां "राखी बनाओ प्रतियोगिता" के अंतर्गत बनाई। विद्यालय की छात्राओं द्वारा बनाई 150 राखियाँ हमारे देश की सीमा पर हमारी सुरक्षा पर तैनात हमारे वीर सैनिकों के लिए भेजी गई।

"परिणामोपेक्षी प्रयोग" पुस्तक का लोकार्पण

मथुरा। विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा ने माधव संवाद केन्द्र पर "परिणामोपेक्षी प्रयोग" पुस्तक का लोकार्पण किया। यतीन्द्र शर्मा जी ने कहा कि उद्देश्यपरक पुस्तकें जीवन जीने की कला सिखाती हैं। विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक आदि सभी के लिए पुस्तकों का स्वाध्याय अत्यंत कल्याणकारी है। स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ानी चाहिए, इसके लिए विद्यालयों से ही प्रयोग शुरू करने होंगे। विद्या भारती ब्रज प्रदेश के संगठन मंत्री श्री हरी शंकर ने पुस्तकों की गुणवत्ता पर प्रकाश डाला।

सरस्वती विद्या मंदिर ब्रज प्रदेश प्रकाशन के निदेशक डॉ. रामसेवक ने कहा कि पुस्तक लेखन एक साधना है, इसमें लेखक का चिंतन, तपस्या, स्वाध्याय की प्रवृत्ति, दिशा - दृष्टि, मनोदशा, लेखन कौशल आदि अनेक बातें समाहित होती हैं।

परिणामोपेक्षी पुस्तक श्रीजी बाबा सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मथुरा के पूर्व प्रधानाचार्य व राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉक्टर अजय शर्मा के अनुभूति प्रयोग पर आधारित कथ्य शैली में लिखी गई है।

“परिणामोपेक्षी प्रयोग” की भूमिका मा. डॉ. कृष्णगोपाल सह सरकार्यवाह अखिल भारतीय स्वयंसेवक संघ ने लिखी है। पुस्तक छात्र-छात्राओं, अध्यापकों और अभिभावकों के लिए उपयोगी है। शिक्षाविद् लज्जाराम तोमर को समर्पित पुस्तक के सैद्धांतिक, क्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक 24 आलेखों को कथ्य शैली में लिखा गया है। पुस्तक का प्रकाशन सरस्वती विद्या मंदिर ब्रज प्रदेश प्रकाशन माधव कुंज मथुरा ने किया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी मंत्री भारतीय शिक्षा समिति पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र ने की।

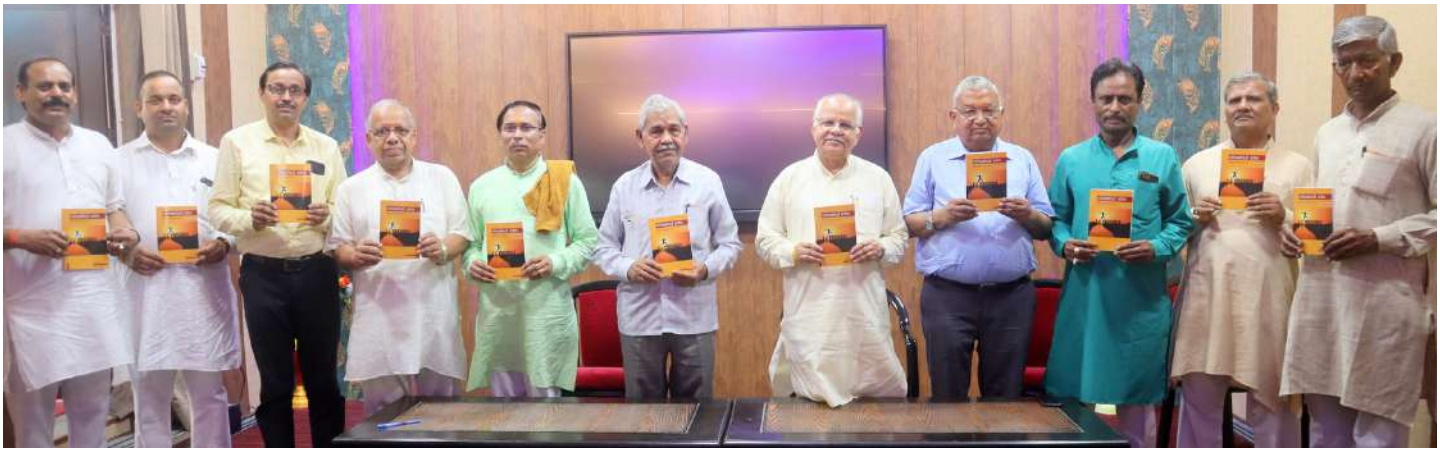

सिलीगुड़ी में चिंतन बैठक का आयोजन

सिलीगुडी | विद्या भारती पूर्व क्षेत्र अंतर्गत उत्तर बंग प्रान्त कार्यालय शताब्दी सदन सिलीगुडी में 19-20 अगस्त 2023 को दो दिवसीय चिन्तन बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विद्या भारती के कार्य की समीक्षा, विद्या भारती केन्द्र से प्राप्त 17 बिन्दुओं आदि पर चर्चा की गई। विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय श्री गोबिंद चन्द्र महन्त, सह- मंत्री सुश्री पवित्रा दहल, क्षेत्र उपाध्यक्ष श्री गोपाल हालदार ने मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर सिक्किम, उत्तर बंग एवं दक्षिण बंग प्रांत के पदाधिकारी, प्रधानाचार्य, प्रवासी, पूर्णकालिक, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आत्मनिर्भर भारत शीर्षक में विवेकानंद व्याख्यानमाला

15 अगस्त 2023 को विद्या भारती, शिक्षा विकास समिति ओडिशा प्रांत की पूर्व छात्र परिषद के द्वारा आत्मनिर्भर भारत शीर्षक में विवेकानंद व्याख्यानमाला भुवनेश्वर में सम्पन्न हुई।

शिक्षण में विद्यार्थियों की सक्रियता बहुत आवश्यकः दिलीप बेतकेकर

वृंदावन। गौशाला स्थित परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्या भारती के पूर्व उपाध्यक्ष श्री दिलीप बेतकेकर जी ने कहा कि आचार्य को कक्षा-कक्ष में अत्यंत सरल और सहज ढंग से अपने विषय को प्रस्तुत करना चाहिए। शिक्षण में छात्रों की सक्रियता बहुत आवश्यक है। ज्वायफुल लर्निंग (आनंदपूर्ण शिक्षा) आज की आवश्यकता है। श्री दिलीप बेतकेकर ने कहा कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए आत्मविश्वासऔर निर्भयता आवश्यक है। एक महिला का उदाहरण देते हुए कहा कि हाथ न होते हुए भी वह हवाई जहाज उड़ाती है। सारा कार्य अपने पैरों से ही करती है। एक दूसरे व्यक्ति का उदाहरण देकर बताया कि उसके न हाथ थे और न पैर, फिर भी वह अचंभित करने वाले सभी कार्य करता है। इसलिए हमें हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। छोटे-छोटे महत्वपूर्ण कार्य अच्छे ढंग से करने से आदत बन जाती है, फिर आदतें हमारा संस्कार बन जाती हैं, इसलिए हमें व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक सभी छोटे-छोटे कार्य अच्छे ढंग से करने चाहिए। रात्रि सोने से पूर्व मंजन करना, नियमित स्नान करना, अपने कपड़ों को व्यवस्थित रखना, अपने कक्ष को व्यवस्थित रखना आदि व्यवहार में होने चाहिए। बच्चों से कहा कि मोबाइल का सदुपयोग अच्छा है परंतु अत्यधिक प्रयोग हानिकारक है। बाजार की रेडीमेड खाद्य सामग्री स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। घर में बना हुआ भोजन-जलपान ही स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। अध्यक्षता श्री शिवेन्द्र कुमार गौतम सह प्रबंधक ने की। धन्यवाद ज्ञापन श्री श्याम प्रकाश पांडे प्रधानाचार्य ने किया। इस अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर ब्रज प्रदेश प्रकाशन के निदेशक डॉक्टर रामसेवक, विद्या भारती ब्रज प्रदेश के शिक्षण-प्रशिक्षण प्रमुख डॉ. अजय शर्मा, सहित संकुल के कई प्रधानाचार्य और आचार्य उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय संगठन मंत्री का रामबन, ऊधमपुर और अम्बफला में प्रवास

देश को शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए कार्य करेः गोबिंद चंद्र महंत

जम्मू-कश्मीर। विद्या भारती के संगठन मंत्री श्रीगोबिंद चंद्र महंत और श्री बालकिशन सह संगठन मंत्री उत्तर क्षेत्र, श्री देसराज महामंत्री उत्तर क्षेत्र, श्री हरि भूषण महामंत्री भारतीय शिक्षा समिति जम्मू-कश्मीर 5 अगस्त 2023 को भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय रामबन में प्रवास रहा। इस अवसर पर माननीय गोविन्द चंद्र महंत ने विद्यालय की अटल टिंकरिंग कार्यशाला, कंप्यूटर कार्यशाला और विज्ञान कार्यशाला का निरीक्षण किया। इसके उपरांत कक्षाओं का निरीक्षण किया और विद्यार्थियों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और पठन-पाठन आदि पर चर्चा की।

बाद में शिशु वाटिका का निरीक्षण कर संचालन व्यवस्था की जानकारी ली। अखिल भारतीय संगठन मंत्री और संगठन के अन्य अधिकारियों ने विद्यालय प्रबंधन समिति और आचार्यों के साथ बैठक की। बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पूर्ण रूप से क्रियान्वयन करना, विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु कौशल विकास पर बल देना, शिशु वाटिका के बच्चों के लिए खेलकूद आदि, आठवीं कक्षा तक मातृ भाषा में शिक्षण,बच्चों में पंचकोश का विकास करना आदि पर मंथन किया गया। अखिल भारतीय संगठन मंत्री ने कहा कि हम सब मिलकर भारतवर्ष को शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी बनाएं। आने वाले समय में भारत विश्व में शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शक की भूमिका में हो और हम पुनः विश्वगुरु बनें, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्य करें।

विद्या भारती के संगठन मंत्री गोबिंद चंद्र महंत का 4 अगस्त को भारतीय विद्या मंदिर नैनसु, ऊधमपुर में प्रवास रहा। इस दौरान श्री बालकिशन, श्री देसराज, श्री हरि भूषण भी उपस्थित रहे। संगठन मंत्री ने जिला केंद्र के विद्यालय के प्रधानाचार्य, अध्यक्ष और मंत्रियों के साथ बैठक की। मानक परिषद रिपोर्ट शेयर की गई और विषय संयोजकों व आचार्यों के साथ भी बैठक हुई। भारतीय विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अम्बफला में अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिंद चंद्र महंत का वंदना सत्र में प्रवास रहा।

विद्यालय खोलने की घोषणा, श्री रामनाथ कोविंद करेंगे लोकार्पण

जयपुर। धानुका परिवार ने सालासर बालाजी धाम में त्रिवेणी देवी धानुका उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय खोलने की घोषणा की है। निजी स्थान पर पदाधिकारियों ने इसकी घोषणा एक समारोह में की। कंपनी की सामाजिक गतिविधियों एवं विद्यालय के बारे में जानकारी साझा करते हुए धानुका परिवार ने बताया कि माताजी त्रिवेणी देवी की 100वीं जयंती पर पवित्र सालासर धाम में विद्यालय का शुभारंभ करेंगे, जिसका लोकार्पण पूर्व राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद करेंगे। धानुका परिवार ने बताया कि 18 अगस्त को बालाजी सालासर धाम की धरती पर त्रिवेणी देवी धानुका उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर का लोकार्पण केवल एक संस्थान का लोकार्पण नहीं है, बल्कि समाज को ज्ञान के प्रकाश का उपहार देकर सशक्त करने की दिशा में एक कदम है। यह सम्मान की बात है कि राजस्थान में विद्या भारती 652 विद्यालयों का संचालन करती है।

गत वर्ष कॉमर्स के तीनों टॉपर्स संस्था के विद्यालय से थे। हमने 11 फरवरी 2023 को अपने पिताजी के जन्मदिवस समारोह पर आयोजित वार्षिक समारोह में उनको सम्मानित किया था। सालासर धाम में नए विद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर ऐसे ही 5 प्रतिभावान विद्यार्थियों को पूर्व राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद सम्मानित करेंगे।

इसके अलावा प्रधानाचार्य लोकेश चौमाला और भवन के प्रमुख वास्तुकार प्रमोद गुप्ता को भी सम्मानित किया जाएगा। गुप्ता धानुका परिवार के सोशल प्रोजेक्ट्स में पिछले 25 वर्षों से जुड़े रहे हैं, लेकिन कभी कोई शुल्क नहीं लिया। यहां तक कि वे स्वयं के खर्च पर साइट विजिट (विज्ञान यात्रा) भी करते रहते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए तत्पर विद्या भारती : डी रामकृष्ण राव

गुवाहाटी | विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष डी रामकृष्ण राव दो दिवसीय असम प्रवास के अंतर्गत विभिन्न महत्वपूर्ण बैठकों में सम्मिलित हुए। शिशु शिक्षा समिति द्वारा संचालित शंकरदेव शिशु विद्या निकेतनों के जिला केंद्र में स्थित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं सचिवों की बैठक असम प्रकाशन भारती गुवाहाटी में आयोजित हुई।

बैठक में जिला केंद्र विद्यालयों की गुणवत्ता वृद्धि प्रभावी शिशु वाटिका, संस्कार केंद्र, मानकीकरण, आदि विषयों के संबंध में चर्चा हुई। इसके साथ ही विद्या भारती उत्तर असम प्रांत के पूर्णकालिक कार्यकर्ता एवं विद्वत परिषद की बैठक में भी राष्ट्रीय अध्यक्ष रामकृष्ण राव सम्मिलित हुए।

श्री रामकृष्ण राव ने कहा विद्या भारती छात्रों को शारीरिक दृष्टि से सबल, मानसिक दृष्टि से सद्विचारी एवं सदाचारी, बौद्धिक दृष्टि से सत्यान्वेशी, प्राणिक दृष्टि से संतुलित तथा आध्यात्मिक दृष्टि से सेवाभावी बनाने का कार्य कर रही है।

विषय प्रमुखों की बैठक में उपस्थित रहते हुए उन्होंने मार्गदर्शन प्रदान करते हुए बताया विद्या भारती समाज को साथ लेकर विद्यालयों के द्वारा सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने का कार्य कर रही है। शिशु शिक्षा समिति असम की कार्यकारिणी बैठक को भी उन्होंने संबोधित किया। विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री डॉ. पवन तिवारी, क्षेत्र मंत्री डॉ. जगदीन्द्र रॉयचौधुरी एवं शिशु शिक्षा समिति असम के साधारण संपादक कुलेंद्र कुमार भगवती विभिन्न बैठकों में सम्मिलित रहे।

झारखण्ड में पूर्व छात्र सम्मेलन

झारखण्ड | 26 जुलाई 2023 को सरस्वती शिशु विद्या मंदिर कुम्हारटोली,हजारीबाग, झारखण्ड में पूर्व छात्र सम्मेलन का आयोजन हुआ था। इसमें कुल 108 छात्रों ने भाग लिया था। 2006 बैच के पूर्व छात्र विकास (बैंक ऑफ इंडिया में शाखा प्रबंधक) से भी बातचीत के क्रम में "स्थानीय विद्यालय के लिए कुछ करना है" इस पर चर्चा हुई और उनके प्रयासों से 2006 बैच के छात्रों ने टेबल टेनिस, कैरम सहित अन्य इंडोर गेम के लिए सामग्री प्रदान की। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 2006 बैच के कुछ छात्रों का विद्यालय में आगमन हुआ और बहुत ही आनंदमय दृश्य उपस्थित हुआ।

कालीकट (केरल) में उच्च शिक्षा दल की बैठक
श्री रघुनन्दन, संगठन मंत्री विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान

पंच दिवसीय प्रांतीय वैदिक गणित व संगणक प्रशिक्षण वर्ग संपन्न

बिहार | भारती शिक्षा समिति बिहार एवं शिशु शिक्षा प्रबंध समिति बिहार के तत्वावधान में सरस्वती विद्या मंदिर, बालिका खंड में आयोजित पांच दिवसीय प्रांतीय वैदिक गणित व कंप्यूटर विषय प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हो गया।

प्रदेश सचिव श्री प्रदीप कुमार कुशवाहा ने कहा कि आज स्मार्ट वर्क का युग है। विद्या भारती के आचार्यों को वैदिक गणित को जन-जन तक पहुंचाने में अग्रदूत बनना होगा और बच्चों में जन प्रबंधन, प्रतिभा प्रबंधन व कौशल प्रबंधन का सृजन करना होगा। वैदिक गणित और संगणक प्रशिक्षण में शामिल आचार्यों के लिए लिखित परीक्षा व प्रश्नमंच का आयोजन भी किया गया।

सुदूर जनजाति क्षेत्र (थारु जनजाति) अवध प्रांत में सेवा विद्या मंदिर में स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम गांव के लोगों के साथ हर्शोल्लास के साथ मनाया गया।

कृष्णचंद्र गाँधी मीडिया सेंटर,सिवान संबोधित करते महामंत्री, विद्या भारतीय अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

विद्या भारती हिमाचल सरस्वती विद्या मंदिर "दाडला घाट" के पूर्व छात्र मिनटों में किसी की भी पेंटिंग बनाने का हुनर रखते हैं दाड़लाघाट के चेतन कश्यप

अटल इनोवेशन मिशन प्रोजेक्ट

अटल इनोवेशन मिशन भारत सरकार नीति आयोग नई दिल्ली द्वारा सरस्वती शिशु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पनागर को ATL OF THE MONTH जुलाई माह के लिए चयनित किया गया है। जुलाई माह में अधिक से अधिक बच्चों को ATL लैब में इनोवेशन प्रोजेक्ट में सहभागिता करायी गई तथा AIM द्वारा संचालित ऑनलाइन कोर्सेस में अधिक संख्या में बच्चों को सम्मिलित करा के प्रमाण पत्र भी भारत सरकार द्वारा प्रदान किये गए। योजना में विद्यालय प्राचार्य श्री शैलेन्द्र गोंटिया एवं विद्यालय के ATL प्रभारी एवं क्षेत्र प्रमुख श्री सौरभ कुमार शुक्ला का अथक प्रयास रहा |

विद्या भारती पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र की चिंतक बैठक

प्रादेशिक जनजाति शिक्षा बैठक

उड़ीसा | विद्या भारती, शिक्षा विकाश समिति, उड़ीसा के योजनानुसार दिनांक 15 एवं 16 अगस्त 2023 को सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, आमुल पर प्रादेशिक जनजाति शिक्षा बैठक अनुष्ठित हुआ है।

इस बैठक में योगदान करने के लिए श्री ब्रह्माजी राव (अ. भा. मन्त्री विद्या भारती), श्री शशिभूषण पलेइ (जनजाति शिक्षा संयोजक, पूर्व क्षेत्र), श्री तारकदास सरकार (संगठन मन्त्री शिक्षा विकाश समिति, उड़ीसा), श्री कमलाकान्त मिश्र (मन्त्री शिक्षा विकाश समिति, उड़ीसा), श्री नृसिहचरण मिश्र (प्रान्त जनजाति प्रकल्प संयोजक श्री सुकान्त कुमार बेहेरा (दक्षिण संभाग संयोजक), श्री विसम्बर द्वारी (उत्तर संभाग संयोजक) को स्वागत किया गया।

15 अगस्त को सुबह 7:30 बजे श्री ब्रह्माजी राव (श्री मन्त्री विद्या भारती) ने विद्यालय परिसर में 77वा स्वाधीनता दिवस के अवसर पर झंडा फहराया।

इस बैठक में प्रांत के 4 प्रकल्पों में से 15 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। किचिपालि मालकानगिरि से 06 . पतोरा, आपड़ा से 01, गोनासिका, केन्दुझर से 02 आमुल, कलाचण्डि से 06 योगदान किये थे। इसके साथ दक्षिण संभाग अध्यक्ष श्री रूपसिंह रावत, दक्षिण पश्चिम संभाग संयोजक श्री जितेन्द्र कुमार पण्डा, कलाहाण्डि विभाग निरीक्षक श्री बिपिनबिहारी मिश्र भी थे।

इस कार्यक्रम में कुल 8 कालांश में चर्चा हुई। 1. उदघाटन एवं परिचय 2 वृत कथन एवं प्रकल्प संबन्धी आलोचना, 3. सेवा कार्य का अग्रगति, 4. जनजाति प्रकल्प का बिकास एवं जनजाति समाज के साथ संपर्क, 5. छात्रावास सम्बन्धीय आलोचना, 6. प्रकल्प का समस्या एवं उसका निराकरण, 7. मा. ब्रह्माजी राव जी के मार्गदर्शन, 8. समापन समारोह।

इस समापन समारोह में स्थानीय विद्यालय के संपादक श्री रमाकान्त नायक ने धन्यवाद किया। वन्दे मातरम् गान के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

Kichipali कुचीपाली सेवा प्रकल्प, ओडिशा के जनजाति भैयाबहन द्वारा माननीय अखिल भारतीय विद्याभारती मंत्री ब्रह्माजी राव और शिक्षा विकाश समिति, ओडिशा के संगठन मंत्री श्री तारक दास सरकार का पारंपरिक नृत्य के माध्यम से स्वागत किया गया।

उड़ीसा प्रान्त के जनजाति प्रकल्पों का निरीक्षण

उड़ीसा | विद्या भारती पूर्व क्षेत्र के शिक्षा विकास समिति उड़ीसा प्रान्त द्वारा संचालित जनजातिय क्षेत्र के विद्यालय एवं सेवा प्रकल्पो मे विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के अखिल भारतीय मंत्री श्री ब्रह्मा राव का प्रवास हुआ। 12 अगस्त को प्रवास के क्रम मे जनजाति प्रकल्प विद्यालय बैठक, थूयामूल कालाहांडी किचपालि मलकानगिरी आचार्य -आचार्य सम्मेलन। प्रवास मे जनजाति समाज के प्रमुख शहीद लक्ष्मण नायक के मूर्ति पर माल्यार्पण, पुष्पांजलि श्री राव ने किया। स्थानीय जनजातीय लोगो से वार्तालाप, बैठक चर्चा किया। वर्तमान कार्य का निरीक्षण, सुझाव एवं स्थानीय क्षेत्र का विकास,कार्य का विस्तार आदि विषयों पर कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा हुई। इस प्रवास मे प्रान्त के संगठन मंत्री श्री तारक दास, जनजाति शिक्षा प्रकल्प प्रमुख श्री शशिभूषण पलई साथ मे थे। राव जी का उड़ीसा के जनजातीय क्षेत्र मे प्रवास चल रहा है।

भारत के 77वें स्वतंत्रता दिवस पर विद्या भारती विद्यालयों में तिरंगा फहराया ...

श्रावण मास की तीज पर कला संगम का आयोजन

दिल्ली। गोवर्धन लाल त्रेहन सरस्वती बाल मंदिर, नेहरू नगर दिल्ली में 19 अगस्त 2023 को श्रावण मास की तीज पर कला संगम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय संगीत, लोक-नृत्य, परिधान एवं खानपान, खेल, रंगोली व मेहंदी आदि से संबंधित विविध आयोजन किए गए। छात्रों, अभिभावकों, 20 विद्यालयों के आचार्यों ने भी प्रतिभागी बन प्रस्तुति दी। महिलाओं ने देश के विभिन्न राज्यों के लोक-नृत्यों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर प्रांत संगठन मंत्री श्री रवि कुमार, समर्थ शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री सुखराज सेतिया, समाज के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वतजन उपस्थित रहे।

23 विद्यालयों में बच्चों को कंठस्थ हैं गीता के श्लोक, वंदना सभा में कराया जा रहा अभ्यास

भीलवाड़ा। टेक्सटाइल सिटी भीलवाड़ा व नवगठित शाहपुरा जिले में 23 ऐसे विद्यालय हैं. जहां के विद्यार्थी वंदना सभा में प्रतिदिन गीत के 75 श्लोकों के उच्चारण के बाद नियमित पढ़ाई शुरू करते हैं। भीलवाड़ा विद्या भारती शिक्षण संस्थान के तहत संचालित आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में संस्कृत भाषा एवं भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बच्चों को प्रार्थना सभा में संस्कृत के श्लोक, मंत्रों का उच्चारण कराया जाता है। बच्चों को अधिकतर श्लोक कंठस्थ हैं।

शाहपुरा जिले के कोटड़ी में संचालित आदर्श विद्या मंदिर के 331 बच्चों को गीता के 18 अध्यायों के सभी श्लोक कंठस्थ हैं। प्रतिदिन वंदना सभा में एक लय में सुमधुर आवाज में गीता के श्लोक सुनकर हर कोई मंत्रमुग्ध हो जाता है। इस विद्यालय में 1160 विद्यार्थी पढ़ते हैं। बच्चों को गायत्री मंत्र, सरस्वती वंदना सहित कई अन्य मंत्र भी कंठस्थ हैं।

बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण : पंचपदीय शिक्षण के जरिए बच्चों में अखिल भारतीय ता का भाव बढ़ाया जाता है। बच्चों का नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक और मानसिक विकास प्रभावी तरीके से होता है। इसलिए बच्चों को विद्यालयों में ऐसे संस्कार दिए जा रहे हैं।

पहाड़ों का सुन्दर तरीके से अभ्यास : बच्चों को पहाड़ों का अभ्यास भी बेहतरीन ढंग से कराते हैं। खाली कालाश में भी बच्चे एक साथ एक स्वर में पहाड़े बोलते हैं। जिसे सुन हर कोई आनंदित हो सकता है। बच्चे बिना किसी हिचक व के पहाड़े बोल रहे हैं।

ये दो चित्र बता रहें हैं कि कैसे विद्या भारती, असम के दिमा हसाओ जिले के सुदूर अंदरूनी हिस्से में सफलतापूर्वक काम कर रही है। 100% छात्र आदिवासी हैं। यह चित्र थाइजुवारी विद्यालय की है।

29 अगस्त, 2023 को विद्या भारती के विभिन्न विद्यालयों में मनाया गया "राष्ट्रीय खेल दिवस" इस अवसर पर परंपरागत खेलों का आयोजन किया गया।

"राष्ट्रीय खेल दिवस" महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यान चंद जी की जयंती के उपलक्ष्य मे मनाया जाता है।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन

जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 110065

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net |
www.vidyabharatisamvad.com

vbabss@yahoo.com | vbsamvad@gmail.com

91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,